

अध्याय १३ वी

२.

६



"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Prashikshan, Mumbai,"

१

आध्यासोकावा॥१६॥

२८॥



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Prashnthen, Mumbai"

१२६॥

श्रीराजीवनयनापनमः॥ श्रीगमकृथाजातेसुस्त्रसंस्कृतीर्थहोनिविद्वा॒ष॥
 गंगेपरीसन्निदीपि॥ निजभक्तां से प्रीये होय॥ इह परत्रति॒रसाम्वारा॥ रघुवी॒
 रवीत्रनिर्भृतिया॒ हाटलापुण्यप्रेमपुरा॒ गंगेष्ठोरनामचाषेण॥ भा॒ गंगेमाजीवा॒
 हेजीका॒॥ द्रष्टासरीतातेजसंजीवा॒॥ तद्वत्तिजलवरेंपुण्या॒ माल्लिनिम
 जनतद्वयस्ति॒॥ तेष्यं घरिष्ठुरित्तुक्त्वा॒॥ मकृथानिर्भृत्यनुदिवि॒॥ ब्रह्मां
 नंहुञ्चवंवल्लानि॒॥ पुणीतकृति॒ विभवन् लोगंगे॒ प्राजीकुरुतांमरावें॒॥ एथं लु
 तिहेतांतरावें॒॥ हेविद्वेषकृतैत्त्वभव्य॒॥ गंगेदुर्मिंजाधीकृ॒॥ रामकृथाकृतां
 श्रवण॥ सकृठाहेति॒ ईकृतीतेस्मान्॥ तेप्रबहुताजालेंजापा॒॥ वीत्रोषहेराम
 कृथा॒॥ ऐसीरघुविरकृथापावन॥ कृति॒ संतश्रोते सावधान॥ तरीवक्ताहृषे॒
 पुण्या॒॥ गगनांगाजीनसमायेष॥ पंधरावेंजाध्याइंसुंदर॥ कृते सीदेउनिंग



(28)

लाद्वावक्रा॥ सगवधोनिमामसौमित्र॥ पंचवरीयेपरतचो॥ मार्गीहृतिष्य
 पद्मकुन॥ वालुतांजड़जालुवरण॥ आश्रमांतपाहतियेउन॥ हीसेशुभ
 रपाभाणीत॥ १॥ जैसें प्राणें विषाक्तउकर॥ कीउहवें विषासरोवर॥ कीनाधि कें
 विषावक्रा॥ शोभीवंतहेसेनां॥ प्रदेविषागतरुवर॥ कीसैं पां विषान्ध्यवर
 ॥ कीनसतांस्वाहस्वधाकर॥ वायरपंसि उद्यायरि॥ २॥ कीहयेवांखुनिजान
 ॥ कीप्रेमें विषाक्तिना॥ कीलुब्धांविषानान॥ उंफाशुभतेविंदेसे॥ ३॥ क्रति
 प्रतियुसावें वर्तमान॥ तरीदेप॥ उक्तु दुकें येउन॥ दशाहित्रादेस तिशुष्य
 ॥ मगरघुनंदनगहिवरठा॥ ४॥ नक्रीवालतिवेमठां लुधारा॥ बीताकाठें
 सुमित्र॥ ५॥ सें बोलतांनवयं क्रजनेत्रा॥ मुर्छनां जालितेवेळ॥ ६॥ निवेष्टीत
 यहेरघुनंदन॥ वाराघालितलशुभगा॥ नेत्रासिलउत्तिजीविषा॥ जगजीव

Sanskrit Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pri
 The Brajwadi Joint Project Number: 10
 Manuscript Number: 10

(3)

०॥ जगलीवयासावध्वेलाप०॥ यह वाधीहेकजात्पराम्॥ नीलग्रीवजपे
 ०॥ पावेनाप्॥ यसिद्रांजलामोहुभ्रम्॥ नवलपरमवाटहें॥ १८॥ अंधकु
 णीबुग्लारिनवर्॥ प्रब्यानीसबांधीतकर॥ बुधमद्दसद्गोदार॥ पाग
 उभीक्षासम्भा०॥ बाढ़ासिमुनेंस्तु गोति॥ म्याजलिंबुग्लामभसि॥ स्म
 ा० निस्तीतेसाटींरघुपति॥ करीत्वलति वलहुं॥ तरिपुराणपुरघु
 नंदन॥ तायातितशुद्वैतन्पा॥ ०॥ समयान्तरभीष्ठाकुपुर्णी॥ दावेवत्तो
 नजगहुरु०॥ आसोकद्विष्टुयदशीतेज्ञान॥ कीसर्वदष्टापेकजाप
 वा॥ हाजगउंवरनामेषुपो॥ मायामयेलटिकाम्यी॥ २०॥ जैस्यास्वग्रीवाज
 न्मदंति॥ यातनाभेगीनान्ताति॥ जपा होतांवीति श्रीति॥ मिथ्यामयेस
 वेहि॥ २॥ स्वयांमातिपत्तिवता॥ जैसीमरणुःखेप्रापनाया॥ परीसवेंवी



३४
जाहोतोतां सौभाग्यपाहतातैसंवी २२ घटयुटेवंदविंश्च॥ तैसाचीअ
सेविंस्वयंभा॥ तरी आवत्तारलीचप्रीतावलुभा संपत्तेनिदावितसे २३॥
आसोसौमित्रसुणेरसुनाश् भ्रांवंतेवृष्णजाठीपर्वते यांसियुसावे
पश्चाष्ट्यसीताप्युद्दिसांगति ॥ २४ ॥ गीरो व्रंदार्णगविमाना ॥ ग्राधीतजातत
प्रावनिला॥ गोहेवंतिरत्पिका ॥ गोधीतउक्तुल्लोमित्र ॥ २५ ॥ वनोवनिरामशो
धीत ॥ सीतेसीतेहेजाक्षवित ॥ कुणनेमेत्वरीत ॥ ग्रावेंवहेतव्यापी
ठां ॥ २६ ॥ वहक्षतवराजहस् ॥ मया गदेसाक्ष्यास ॥ तयांसियुसेप्रायो
धाधीश ॥ ग्रावेंडाडसुमानमि ॥ २७ ॥ गज्ज्वाधुक्तसीकुकुरंग ॥ नकुक्तक्त
रेष्टग ॥ ग्रोद्विकावक्रवांवेष्टग ॥ सीतारंगुसतसे ॥ २८ ॥ ग्रोन्तीनदेतिउ
तर ॥ स्यांवरीकोयलारसुविग ॥ सुणेसौमित्रजाठीधनुष्यशार ॥ उदी



(6)

नक्षंतरसक्त्वही॥४॥ सौषित्रत्यपोरघुनंदनं॥ हेत्रेविंजापातिलुभीषं
 गयां॥ स्यांवरी क्रोधमासापां॥ नवराघासहसाहि॥५॥ सीताविरहें रघुनंद
 न॥ भुलोनिकोलेकायेव वया॥ लघुमणापि मृणोतुंक्रोण॥ कायेकारणउ
 भायेशं॥६॥ तेव्हांसौषित्रबोलेव वया॥ तेरामांवादंधुषिंपूर्ण॥ मगबोले
 रघुनंदन॥ रामतोक्रोणकौठीहि॥७॥ नवकोहं उभंगीलें थोरा तोरामस
 प्रधीर॥ मगबोलेश्चितावर् प्रभु यक्षोयं भंगीछें॥८॥ जनवान्वीया
 पंउयांत॥९॥ तुष्ट्वं गीलेय अर्था॥ जनकक्रोणां वाक्रोणहें सत्य॥ सांगम
 लज्जातांवी॥१०॥ यानक्षि वाल्लोपिता॥ तोजनकृजापातत्वता॥ आहा
 ज्यानकी गुणसरीता॥ मज्जआ तांदाविंरे॥११॥ सौषित्रासित्पणोरघुविर
 ॥ आमुत्रें क्रोहें ग्रामसंहीर॥ येत्रत्यपोज्ञायोध्याउरा वोविलें कांतर पी



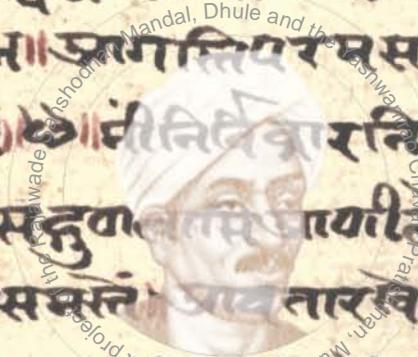
त्रुजाज्ञे॥८॥ वना सीमालों कोवक्षोण॥ उत्तरदेतल मुमण॥ तुम्हीं जा
 म्हीं श्रीता श्रीदत्त॥ तिथं जण प्रालों वन्नं॥९॥ तरीया नदि दाविं तरीत॥
 ऐसं बोले रघुनाथ॥ भुग्नीं सीपडे मरुणित॥ सोमि चं मगसावरी लगा॥१०॥
 तों अप्त्ता सिगे लरहि नक्षर॥ रात्री माति प्रगटे गोहीणी वर॥ रामद्वयो हा
 जान्हितो मित्र॥ आति तिक्रव हं चक्रां॥११॥ स्त्रावो उसु मित्रासुत॥ स्वामिं चं
 दहन के आदेत्य॥ सीतल की॥ तावि तित सा॥ सीता विरहं द्रोगियां॥१२॥
 श्रीरघुनाथ देवाधीदेव॥ हावि इ राहि॥ गव॥ जाओ आजीत स्वयं प्रेव॥ उम्हांध
 वधाये जया॥१३॥ सीता सीता द्वयोन॥ आळंगी व सपाधाण॥ ते ताल्लाल
 उहोन॥ जाति दै सोन विमानि॥१४॥ मुमित्रामिस्यणे र उनंदन॥ वराघेउं
 अगस्ति द्वर्णा॥ स्यासि संगुं हं वर्तमान॥ खुद्दि पुर्णसंगे लतो॥१५॥ आग

The Rajawadi Sanskrit Mandal, Dhule and the Lachwani Prasarak
 Number: १५
 Joint Project of
 the Rajawadi Sanskrit Mandal, Dhule and the Lachwani Prasarak

स्तीक्ष्णा आश्रमां प्रति ॥ ग भसौ मित्रै दोषे जाति ॥ तों हार पाठ जाउन हेति ॥ मग
 उन्नेगह तिते घेँ वी ॥ ठां अल शो हङ्कार मिव त्तमान ॥ बीष्या सांगति जाउन
 ॥ तो सीता देउ निगल रावण क्रै दिस जानी मम जडेतो ॥ ए अंतरी वी
 वारी मुनि ॥ श्री रामराज्य हीन हो उवाचि ॥ हार लिली जनक नंदि नीं द्वा वें कर
 निं लिहला ॥ क्षेत्री विरहीन रथु ॥ हन ॥ रातां न द्वावें पान्वें द्वानि ॥ मग शो
 व काहा तिं सां युन ॥ पाठ विरु तं कार ॥ आज श्री हर्षण जालें तु म्हुतो ॥ आतां
 जावें आयु लेपं शे ॥ हासों आले र वस्तमा नां ॥ हङ्कृत क्रै क्षि कं जाणो नि ॥ ठा० प
 र तो निवा लीला र रथु विरा ॥ परीक्रोधा व लासो मित्र ॥ द्वाणो नी हृषी व रुदीण वि
 प्र ॥ जगदो हार परत विला ॥ ए जोती लीण जाणो न ॥ लता प्रदर्श व लेता
 आ ॥ कामधनु धा आउह्य गोन ॥ शुष्क क्राण नारी ली ॥ ८८ ॥ व रुद्धमत्तर धरीं उ

The Raithwade & Anshodha Mandal, Dhule and the Kashwantia Chavhan Pratishthan
 www.raithwade.com
 www.kashwantia.com

गवला॥ देवतां जाभायें उपरिला॥ परीसजापोनिगोपयीला॥ बीता
 मर्तीघातला पाचेरीस्थि॥ अमृतकुंभ देवेलाधला॥ तोजापोनिब्रह्म
 बीडपटिला॥ तैसाजगद्युधरापिजाला॥ माघाराहविलासमजोनि
 ॥ ए॥ मगद्युषेरघुनंदन॥ उगास्तिपरमसज्जान॥ तोसीतेविपापाम्बेंद
 शण॥ सहसाहिनघेक्षी॥ तंनिरिवारनिर्गुण॥ सीतासवंसिकारण॥
 तीरोंमजजागेकरुन॥ सहुतातासापायीडे॥ एतीवीवनिर्गुणयंव
 नरते॥ त्रीगुणापाणित्वेंसमर्तं जातारवक्तुव्रेवहुंते॥ नानापरीम्बी
 राविकला॥ ए॥ मीजलामजास्तपनीश्चीसि॥ हंसवजापोजागस्ति॥ तोत्रष्ठि
 माजिवेवक्तुगमस्ति॥ तपोज्ञानितेजस्वी॥ विष्णुसोम्बीमजगलेतु॥ पर
 तोनिजलापंववरी॥ दृश्लताकूवढितांपोटि॥ सीतमीता स्मृपोनिस्यां॥ शु



The Kalawade Chododan Mandal, Dhule and the Vashivardhan Chavadi Prayag Samiti

(6)

एवं वर्षीया गवरुना ॥ नाल्काच वालिहार चुनंदना ॥ जैसी अहं हेह खुक्ति
 संउना ॥ योगी विवरेनि रंजनि ॥ क्रीप्राण त्यागे व्रत्या जैसि ॥ विंश्वोपत्या
 मीज महामनीसि ॥ विंसंसार मास्यानि ॥ विरक्त त्यागी प्राणि हुनि ॥ जी
 ठं देह त्यागि उरग ॥ क्रीतयोधन वर्षीयांत्याग ॥ क्रीयवित्रेंसागिलाकु मार्ग भ्रष्ट
 व्रमज्जाणो नियां ॥ क्रीयरनिंता राजुन याविति ॥ आत्मस्तुति संउल्लिङ्गंति ॥
 क्रीयमंगलप्वीसंगति ॥ नक्ती श्रातीकरहीपथ ॥ क्रीमंसार उवक्तव्य
 ॥ वीवे व्रेंसागि जैसंवमन ॥ तेसि पंचवर्षीयायुग ॥ रामल सुमणा वालिहे
 इआ ॥ तोमागदेवतां रघुनंदना ॥ हादशहस्तलां ववरणा ॥ वारहस्तरंदशणा
 ॥ राशसपाउलेंडमटति ॥ त्याजवदिकुंकु प्रांकितजाणा ॥ उमटले उरीते वे
 वरणा ॥ मुक्तं विहमेंपर उंगठोन ॥ उक्तुमणावि स्पितपाहा ॥ वर्णव्रमणीये

(६८)

श्रीत्रकुव्युषणा॥ त्रोष्ठीतजातघोरविषीन॥ तोंजरायुदेवीउडुहुन॥ र
 तेंद्रस्तनिभंबाग्ना॥ द्युमीक्षुक्षुलेहाबहुंत॥ उहुनिआरक्तनगहिस्त॥
 तैसाजरायुपद्धाहुंत॥ रामम्मरयाकरित् त्री॥ ६८॥ रघुनाथें शरहाति
 घेत्तुल॥ धनुष्वेत्तीवठविलें॥ श्रीरामास्त्रैसेंगमलें॥ द्वीभास्त्रस्वैमलासे
 अ॥ असुनियंजनकनंदिनि॥ वैसलुखेतुसहुतेउनि॥ रक्तवाहत्यहुंत
 उनि॥ पर्वतजैसापाश्चरत॥ इनाजवक्त्रात्त्राप्यपावंती॥ तोंग्रनामां
 वीप्युधुरथनिं॥ रघोत्तमैक्षुक्षुवावंती॥ यतधांउनिंत्यायासी॥ ६९॥ तों
 नेत्रीउरलासेप्राण॥ जरायुपहिलाकरित्तमाया॥ रघुनाथेंतोभक्तहेसु
 ण॥ हह्यंपूर्णगहिवरठा॥ ७०॥ जरायुसषुट्टेउनिहेव॥ वोक्तुकरीआयो
 ध्यानायक॥ जैसेयेक्षुलंप्रतांबाबक॥ मातातत्त्वमलियापरी॥ ७१॥ कीपर



(X)

मज्जात्तं धुरणी॥ कउलियां वाटेजे विहणी॥ स्पष्टवपरी न्यापपाणी॥ हृ
 दइधरनि विलपता॥ ७५ परमावदकरी सौमित्र॥ जगेजटायुभक्तजाणी
 मित्र॥ जो मित्र सारथी बाषपत्र॥ ८६ सापविनाउचो॥ ८७ जटायु सहयोरघुवि
 र॥ बारे काये जान्नासमाचार॥ तोसजसां तें अनुप्राव॥ ज्ञाती वाक्तव्यामेह
 बोल्गवपा॥ ९८ ग्रीगामावेदर्णद्विजना॥ ९९ कुम्भजटायु सांगेतेवेळी॥ स्थयोग
 वणानें सीतानेलि॥ म्यां सोउवि-नीहाति ये घंड॥ १०० जों वतें पाहेरघुनंदन॥
 तों अस्त्रसारथी जाणी स्यंदन॥ १०१ गवणां वीवस्त्रं जाळं कारुण॥ सुर्णहोउ
 नियडियेलो॥ १०२ पाहतां जटायु न्यापराक्रम॥ एउटाति गही वरलक्ष्मरघुनंदन
 ॥ सीतागोकाङ्कु नियरम॥ गोकृवाटेजटायु बा॥ १०३ जटायु बोलेववण॥ र
 घुयनि तुझी घालो नियं जान॥ गास संघेत लामा म्याप्राण॥ पक्षउपजोनिता



८

४८
कीले॥७॥माश्वेनं जातां न बोलवेहरव॥सुयोनियदि ठेवि मस्तक॥श्रीराम
त्रेण वेनेत्रोहन॥अभीवाकजालाजरायुसी॥८॥मगबोधेरघुनंदन॥जरा
युलुजमिंडठविधा॥मज्जतुंसाद्य होयेपुणीदशरथाएसेसत्त्वग॥९॥मग
बोधे जारुणनंदन॥एसेमज्जघुटनयोपरण॥तुझ्यानिजंगावरीजाण॥
सोईनप्राणजातां ची॥१०॥जरायुविलोकितरमवदन॥तैसेंचीहृदइंरे
खीलेंधान॥मुखीकृतीननमस्तरण॥११॥चीलिप्राणतेक्षाग्निं॥१२॥श्रीरामें
होतहृदइंधीला॥तेथेंचीहृदयायुनंप्राणसोरिला॥ब्रह्महंसुघेउनिजाला
कीबैसलुज्जरायु॥१३॥जरायुमस्त्रणरघुनंदन॥तुजस्यगीदशरथभेटे
लजाण॥त्यासीसीतानेलीहेंवर्तमान॥सहमाहिनसांगावे॥१४॥परमप्रता
पीदशरथयीता॥कूर्मजुमींसयेइलमाणुता॥शालागिहेनसांगाविवर्ती॥



(8)

जातत्वताज्ययुर्म्‌ प्रीरावणां सिवधुनि पाठविषाखग्निवनि॥ मग
 स्वमुखें करनि॥ व्रतांतसर्वतो वीरां गे उरा॥ अस्मोज्ञा युवर्ग पावला॥
 रथुनाशें तोषी ऋष्मानिला॥ हत्रारयें धुलोतासु पाविला॥ वाक्रांवीये यु
 धकाढी॥ अग्नामि जनकामाते॥ दीत्रयमानीलें जरायुते॥ त्यस्वेनी
 संगें सीताकांते॥ पंचकरीसक्राढ़ असीला॥ एवं घटि घसियेउनि बैसो॥ श्रीरा
 पत्यासिगोष्टसां गेष्टुसे॥ जटायु तत्विग्नें॥ रथुपति वाजावउता॥ एष्टुता
 श्रीउत्तरधिकायासमत्ता॥ करीताजाज्ञा द्वावा भ्यास्तत्॥ सुभित्रें क्राणें मेळउ
 निबहूंव॥ अग्नदिधलातया सि॥ १७॥ औसमत्तव्रस्तां कर॥ शरणां गता
 वाकज्ञपंजर॥ पुटें वाढी उरा येवें द्र॥ सीतासुंदर व्रोधावण॥ १८॥ दक्षण
 पंशें दंडउकरणांत॥ जेष्टें गहिलारथुनाश॥ त्रीविलीपों लापी लीसत्य॥ बा

७



(8A)

वाचीन्हंकितजास्यापी॥८॥ यमुत्तंगीभीपरमगहण॥ तेषेणाहीउआयो
 धाधीवाजाण॥ आहासीतासीतामृणौन॥ दृश्यपाषाणजावंगी॥९॥ तेंवै
 लासिंवर्तचेनवल॥ वैसलाज्ञासतंजप्त्वानिग्रहातिंघेउनिजपमाल
 जयेकोमलरामनाम्॥ जिकंवाललहवहव॥ जेंसहस्रनामाहुनिंनि
 मेग॥ चंद्रापरीसज्जातेसीतल॥ अप्तताहुनिगोउजों॥१०॥ जेंदेनक्राप
 रीसतेजाल॥ जेंकांजाकाज्ञायसावेगाल॥ जेंसबूज्ञानंरावेंमूलनाम
 वेवलपरक्रस्॥११॥ स्यसगुणम् प्राणे गुल॥ क्षयमायामयेघानंदघनस्तप
 शांदेनामपरण॥ जानंतयुगेंसावेग॥१२॥ रूपासवंवयीनामनिर्वच॥ रूपस
 पंक्तिमायामयेसाच॥ नामजार्थकुरीतांगाच॥ वेदतटतराहेला॥१३॥ जा
 सतेनामसवंविसार॥ जामवंडजपतांकर्षुरगौर॥ तेषेहीमाद्रितनयाजो



(9)

उनिकर॥ वीनविसादरक्षीवाते ॥१७॥ स्नेहोस्वार्थजपञ्चावीध्यान॥ क्रोणा
 व्रेंकरीतांगात्रदिन॥ कोणाशोरञ्जाहे तु म्हांविणा॥ मजलापुणसंगाते ॥१८॥
 ॥ शिवस्यापाएैव्रेंसुभक्त्यावीं॥ सकलगुणसरीतेत्रावणपरवाणी॥ जोर
 विकुळमुगुटदिग्मर्णी॥ प्रीध्यातांग्रावेतयाते ॥ ज्ञोगास्सकाननदैश्च
 न्नर॥ जोभक्तहृदयार्थिद्यमर॥ जाऊ ज्ञानतमनश्चाकृदिवाकृ॥ तोडस
 रश्चीराम॥ अ॥ जो त्रैठोक्तस्त्रभीक्रान्॥ जो निगमवल्लिवेंपक्षप्रवा॥ जो ज
 गदांकरव्यंदनिर्मल॥ तमाकनिक्लश्चीराम॥ >॥ जो हिैंबमुखदर्घहारण॥ जो
 भवगजहारक्षयंव्यानन॥ जो जनक्षज्यप्रातमरवपाक्षण॥ त्यावेंध्यानकृ
 रीतोंग्मिं॥ च॥ ऐक्षतांहंसीनलिभवानि॥ तोरामहिंउत्तोवनोवनि॥ सीता
 शीतास्मौनि॥ वृष्णपावाणञ्चाक्षितो॥ रावणंनेत्रीत्याक्षीयुवतीस्त्री



१४
योगेन्मंशलिमदि॥स्यावेंधान्नयाहोराते॥क्रीतातुम्हीनवरहेंघाति
वत्सलोतोरघुविरातीत्तारीपरमसदुभार्॥वेदआवीतोभोगेंद्र॥ने
णतिपारजयाक्षा॥तोषुर्णव्रत्यानंदतिर्गुण॥देवांकीक्रावयासोउवण
सगुणलीडावेषपर्ण॥नक्ताउतीदावित्ता॥नावीष्वरूपयेक्षरघुविरा
जेबिंयेक्षरसुवर्णविहृत्याक्षमार्यकीबहुंतसदनेयेक्षमांतरा॥सीतावर
मापक्षतैसा॥७॥कीबहुंतरहीणायव् घुड़लोहोयेक्षरस्त्रेंप्रापार॥८॥
येक्षरतंतुविकीच॥तैसारघुविरस्त्रेसी॥९॥वहृंविंदुयेक्षरधर्यघृतयेक्ष
वर्णीक्षमापार॥कीप्रायंतीवध्यातसा-वार॥येक्ष-कीनादहुप्रहुमी॥१०॥येक्ष
उविंविहृंतवनस्पति॥येक्षवेदपरीबहुंतश्राति॥कीयेक्षान्वनभीक्षक्षत्वाति
नगयोंजैसीप्रापार॥११॥तैसारामव्यापक्षतत्वता॥मगबोलेहीमन्तर

Joint Project of the
Sant Tukajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the
Vaidika Sanskrit Mandal,
Mumbai.

(१०)

सुता॥ तुम्हीयेक्षमहिसांवर्णिता॥ यारघुनाशभुलविनमी॥ ४॥ मगजन
 क्वजेवेन्हृप्तरवंति॥ रामासन्मुखजालीकाननिं॥ क्रांवनवर्णमुहांस्यवह
 निं॥ यद्यमयनिंसुरेभवार्जा लोलतांश्चरवतिहंतपंती॥ तेजेंतरुपतसेमी
 ति॥ आयणांते जादिग्रानि॥ अतकर्णिगतेतीयेकी॥ ५॥ जांगीवामकरंद्या
 पार॥ यासुवासेंतुमकांतार॥ रुगधासेवेधुनिसमग्र॥ बाटपहेवत्रेंधंव
 ति॥ ६॥ विमल्यायेपीतवसन॥ रक्षजानंकरींमंडितपुर्ण॥ राघवेंतेसहस्री
 देवोन॥ मुखमुरजोनिंबातिउष्टु॥ तीकउनयाहेकीसर्वथा॥ तवंतेषु
 ठंपुटेंयेतजगन्माता॥ सुगोस्वामिंरघुनाशा॥ आठेंमीसीतायाहाम्रज॥ ७॥
 ग्रामुतितीयेसीरकुन॥ रामजानंगीहक्षपाषाण॥ आङ्गीर्यकीलसुमण॥
 आनक्षिसुरोनजातिकी॥ ८॥ मगज्ञालोजीजात्मारामां॥ विषत्रांवहृदयापु

१०४

मन्त्रामां॥ ज्ञानके लागि पूर्णत्रिदां॥ आलीजाताया वेंजी॥ २॥ व्याघ्रस्त्रीये
मुखांतुनि॥ एवंभास्त्रेवांस्त्रेकुरंगीतंती॥ आयोध्यानाथलुश्चीरावंती॥ जालीस
दोनितैसीत्व॥ ३॥ सुरवरपाह तिगगावंती॥ द्वृष्टातिज्यानक्षिजवब्रह्मासो
नि॥ तिक्ष्णेन पाहेमोक्षदानि॥ क्रोणभविधीचारवंती॥ ४॥ सुमित्रस्त्रोपद्यद
लाप्स॥ प्रनमोहननिर्वित्रप्रस्त्रसा सीतासीतालंगी सर्वसासा॥ पुरविंश्चा
येश्वातियेवी॥ ५॥ सुमित्रासिमग्रात्मसुवीर॥ तुम्हांसनेणवेक्षायद्यवि
कार॥ हेष्यगणंदेवीसात्यार॥ उच्चनावया आलीआम्हातें॥ ६॥ वीवा
सीक्रोनियांपण॥ रुद्रवावया आलीआपण॥ तुम्हांसनेणवेहेखुण॥ अंत
रहाननक्षत्रेवी॥ ७॥ दैलासीवाखुणंसपत्त॥ सुमित्राससांगेरपुनाश्
स्त्रिंदमाताजालितटत्त॥ द्वृष्टोहाआजीतपूर्णत्रसा॥ ८॥ मगनेष्ठल्पीठ





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com